Dr. Dhananjay Kumar
Assistant Professor
S.R.AP college
Course - BA I

3) शिवाजी और मुगल संबंध (1660-74)

- महादेव गोविंद रनाडे का मानना है कि दक्कन भारत में औरंगजेब का आक्रमण ना हुआ होता तो एक शक्ति के रूप मे मराठा का उदय नही होता, शिवाजी के नेतृत्व में, जिसने मराठा के लोगो को नेपोलियन की भाँति एक ऊँच सैन्य संगठन में बदल दिया।
- शिवाजी और औरंगजेब के बीच तनावपूर्ण संबंध के पीछे मुख्य वजह है

(i) मुगलो के 50 परगना क्षेत्र जो 1636 के संधि के तहत ~~बिज~~ बीजापुर को दिया गया था उसे शिवाजी ने बीजापुर से छीन लिया। मुगल पुनः इन क्षेत्रो को पुनः पाना चाहते है

(ii) शिवाजी की आक्रमक विस्तारवादी नीति लगातार मराठवाड़ा क्षेत्र में क्षेत्रो को जीतते जाना जो तकनीकी रूप से मुगल का क्षेत्र है इसलिए शिवाजी को नियंत्रित किया जाना आवश्यक तभी ~~दक्कन~~ दक्कन भारत मे मुगल की सत्ता बनी रहेगी।

- मुगलों की शुरुआत से ● रणनीति और जो उभर रही शक्ति मराठा।

→ मुगलो का मानना था कि ● नई उभर रही शक्ति मराठा तथा पुराना old Power —— में टकराव उत्पन्न हुआ होता है तो old Power ही जीतेगा क्योंकि सब से सैन्य उपलब्धि बहुत ज्यादा है परंतु ● मुगलो की रणनीति उल्टी पड़ गई नई उभर रही शक्ति

मुगल शिवाजी संघर्ष 1660-74 तक चला।

① मुगल बनाम मराठा संघर्ष प्रथम चरण सूरत की पहली बार लूट (1664)

= औरंगजेब ने इस समय अपने मामा शाइस्ता खाँ को दक्कन दक्षिण भारत का सूबेदार नियुक्त किया है इसे ही शिवाजी प्रमुख मराठा के दमन का पूर्ण दायित्व सौंपा गया है अतः 1660-63 तक शिवाजी और शाइस्ता खाँ संघर्ष लगातार चलता रहा। मुगलो ने मराठा के कई महत्वपूर्ण दुर्गों पर नियंत्रण कर लिया

जैसे - इस्लामाबाद

- ऐसा लगने लगा कि शिवाजी अवश्य ही समाप्त हो जायेगा लेकिन 1663 में पूना में मौजूद मुगल शिविर पर मध्य रात्रि में अचानक हमला कर शिवाजी ने मुगलों की सैन्य क्षमता को ध्वस्त कर दिया, शाइस्ता खाँ का पुत्र भी मारा गया तथा शाइस्ता खाँ से निराश होकर औरंगजेब ने शाइस्ता खाँ को दक्कन भारत से हटाकर बंगाल का सूबेदार बना दिया और दक्कन भारत में शिवाजी का प्रभाव बढ़ता चला गया।

मनूची ने अपनी रचना Storia do Mogor में शिवाजी-शाइस्ता खाँ का विस्तार से वर्णन किया है।

शिवाजी ने इस जीत से उत्साहित होकर मुगलों की सबसे समृद्ध शहर सूरत को 1664 में लूट लिया, यहाँ का फौजदार इनायत खाँ शिवाजी के आक्रमण के डर से ही भाग गया, शिवाजी ने यहाँ से लगभग 1 करोड़ रु लूट।

इस घटना को ही सूरत की पहली लूट कहा गया। इस समय सूरत में अंग्रेजी factory का प्रमुख जॉर्ज ऑक्सेंडन था जो सूरत की लूट को अपने आँखों से देखा था।

⑤ शिवाजी तथा मुगल संघर्ष द्वितीय चरण:-

(1664-74)

शाइस्ता खाँ को हटाने के बाद औरंगजेब दिलेर खाँ दक्कन दक्षिण भारत के सूबेदार को बनाया। लेकिन शिवाजी प्रकरण का पूर्ण दायित्व सौंपा। मिर्जा राजा जयसिंह को जो मुगल अधिकारी थे आमेर रियासत के राजा थे जिसे 7000 का मनसबदार बनाया गया था।

मिर्जा राजा जयसिंह की रणनीति दक्कन भारत में पहली की रणनीति से बिल्कुल अलग रही।

①